

वृक्ष खड़ा है उसको तुम किस प्रकार अपनी भाषा में व्यक्त करोगे ? बड़े लड़के ने कहा, “शुष्कं काष्ठं तिष्ठत्यग्रे” दूसरे ने कहा, “नीरस तरुवर विलसति पुरतः”- बात एक ही थी; कहने में फर्क था । बाणभट्ट ने अपने छोटे लड़के को ही पुस्तक पूरी करने का भार सौंपा ।

यह तो रही साहित्य के शब्दसंयोजन की बात ! साधारण बोलचाल में भी बड़ा अंतर हो जाता है । भाव को प्रभावशाली भाषा में व्यक्त कर देना ही साहित्य है । जो मनुष्य किसी गलतफहमी को दूर कर रूठे हुए मित्र को मना लेता है वह सच्चा साहित्यिक है ।

वार्तालाप की शिष्टता मनुष्य को आदर का भाजन बनाती है और समाज से उसकी सफलता के लिए रास्ता साफ कर देती है । मनुष्य का समाज में जो प्रभाव पड़ता है, वह बहुत अंश में पोशाक और चालढाल पर निर्भर रहता है, किंतु विषभरे कनकघटों की संसार में कमी नहीं है । यह प्रभाव ऊपरी होता है और पोशाक का मान जब तक भाषण से पुष्ट नहीं होता है, तब तक स्थायी नहीं होता । मधुर भाषी के लिए करनी और कथनी का साम्य आवश्यक है, किंतु कर्म के लिए वचन पहली सीढ़ी है । मधुर वचन ही विश्वास उत्पन्न कर भय और आतंक का परिमार्जन कर देते हैं । कटु भाषी लोगों से लोग हृदय खोल कर बात करने में डरते हैं । सामाजिक व्यवहार के लिए विचारों का आदान-प्रदान आवश्यक है और भाषा की सार्थकता इसी में है कि वह दूसरों पर यथेष्ट प्रभाव डाल सके । जब बुरे वचन आदमी को रुष्ट कर सकते हैं तो मधुर वचन दूसरे को प्रसन्न भी कर सकते हैं । शब्दों का जादू बड़ा जबर्दस्त होता है ।

मधुर वचनों के साथ यह भी आवश्यक है कि उनके पीछे टकसाली भाव भी हों नहीं तो मुलम्मे के सिक्कों की भाँति वे बेकार रहेंगे । हृदय की मलिनता और मधुर वचनों का योग नहीं हो सकता है । वचन के अनुकूल जब कर्म भी होते हैं, तभी मनुष्य वंद्य बनता है ।

मन, वाणी और कर्म का सामंजस्य ही मनुष्य को श्रेष्ठता के पद पर पहुँचाता है । फिर भी वचनों का विशेष महत्व है, क्योंकि एक कटु वचन सारे किए-धरे पर पानी फेर

सकता है। यद्यपि यह ठीक है कि दुधारु गाय की दो लातें भी सहन की जाती हैं, फिर भी दूसरे के स्वाभिमान का हनन कर उसके साथ उपकार करना कोई महत्व नहीं रखता। वाणी की मधुरता के साथ विनयपूर्ण व्यवहार ही शिष्टाचार है। शिष्टाचार का अर्थ लोग दिखावा या तकल्लुफ करते हैं। लेकिन वास्तव में उसका अर्थ है- सज्जनोचित व्यवहार। मधुर भाषण के साथ इसका भी मूल्य है। उनके द्वारा मनुष्य की शिक्षा-दीक्षा और कुल की परंपरा और मर्यादा का परिचय मिलता है।

किसी काम को कराने के लिए कृपया शब्द का प्रयोग शिष्टता का परिचायक होता है। काम हो जाने के पश्चात् धन्यवाद कहना भी जरूरी है। जो अपने से नीचे हैं उनसे कोई ऐसी बात न कही जाए कि जिससे यह प्रकट हो कि हम उनको नीचा समझते हैं। अपने से कम स्थिति के लोगों के स्वाभिमान की रक्षा करना सज्जन का पहला कर्तव्य है।

जो काम करना है उसको प्रसन्नता से करना चाहिए और उसके संबंध में कोई ऐसे शब्द भी न कहने चाहिए जिनसे प्रकट हो कि यह काम नाखुशी से किया जा रहा है या उस काम के करने से दूसरे के साथ एहसान किया जा रहा है। या तो कोई चीज न दे और दे तो पूर्ण उदारता से और प्रसन्नता के साथ। कम-से-कम जहाँ किया में उदारता हो वहाँ 'वचने दरिद्रता' न आने देनी चाहिए।

यदि इनकार ही करना पड़े तो उसमें अधिकार और अभिमान की गंध न आनी चाहिए। इनकार मजबूरी के ही कारण होना चाहिए चाहे वह सैद्धांतिक मजबूरी हो या आर्थिक इनकार शिष्टता के साथ भी हो सकता है और अशिष्टता के साथ भी। प्रायः लोग अशिष्टता से यह कह देते हैं - जाओ ! अमुक वस्तु यहाँ कहाँ से आई, तुम्हारा कोई देना आता है ? घर वालों को तो जुड़ता ही नहीं तुम्हारे लिए कहाँ से लाएँ ? इनकार करने में जो बातें कही जाएँ उनमें परायेपन का भाव न आने देना चाहिए। इनकार करते समय खेद प्रकट करना शिष्टाचार की माँग है। कहना चाहिए कि 'मुझे बड़ा खेद है कि आपके लिए इनकार करना पड़ता है। आपने यहाँ आने का या माँगने का कष्ट किया और मैं इस विषय में आपकी सेवा न कर सका।'।

वार्तालाप में हमको व्यापारिक या जाबते की बातचीत और निजी बातचीत में थोड़ा अंतर करना होगा । व्यापारिक बातचीत भी अशिष्ट न होनी चाहिए, किंतु वह नपी-तुली हो सकती है । निजी संबंध की बातचीत में आत्मीयता का अभाव न रहना चाहिए और थोड़ा सा कष्ट उठाकर बात को पूरी तौर से समझा देना अपना कर्तव्य हो जाता है । कुछ लोग सबके साथ निजी संबंध का-सा ही वार्तालाप करते हैं, यह भी बुरा नहीं है; किंतु बात उतनी ही कही जाए जितनी निभाई जा सके ।



शब्दार्थ :

भौतिक बल – शारीरिक ताकत । न्यून – कम । पंचमहाभूत – पृथिवी, जल, आकाश, वायु, अग्नि । सहकारिता – सबसे मिल कर काम करना । वैमनस्य – विरोधी भाव, नाराजगी । माधुर्य – मधुरता । मनोनुकूल – मनको अच्छा लगने वाला । न्यूटन का गुरुत्वाकर्षण – पाश्चात्य वैज्ञानिक न्यूटन ने बताया है कि पृथ्वी की माध्याकर्षण शक्ति चुम्बक से भी बढ़कर है । कोयलकरिलेत – तुलसी ने बताया है कि कोयल किसी को कुछ नहीं देता है और कौआ किसी से कुछ नहीं लेता है । लेकिन कोयल अपनी मधुर बोली से सबको खुश कर देती है । कौवे की कर्कश वाणी से सब नाखुश हो जाते हैं । कादम्बरी – बाणभट्ट द्वारा रचित प्रसिद्ध गद्यकाव्य है जो कि संस्कृत भाषा में लिखा गया है । शुष्कं काष्ठं तिष्ठत्यग्रे – आगे सुखी लकड़ी है । नीरस तरुवर विलासति पुरतः – आगे नीरस वृक्ष शोभा पा रहा है । गलत फहमी – भ्रम धारणा । चालढाल – आचार व्यवहार । जबर्दस्त – जोरदार । टकसाली भाव – सच्ची भावना । मुलम्में के सिक्कों – नकली मुद्रा । कटु – तिक्त । शिष्ट – भद्र । सैद्धान्तिक – किसी विद्वान से सम्बंधित । मजबूरी – बाध्यता । वार्तालाप – बातचीत । विषभरे कनकघट – बाहरसे आकर्षक मगर भीतर से हानिकारक, सफेद भेष में काले दिलवाला । वचने दरिद्रता – कथन में कमी । आत्मीयता – निजीपन ।

प्रश्न और अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :

- (क) भाषा के द्वारा मनुष्य ने किस प्रकार की उन्नति की है ?
- (ख) मधुर भाषण किसे कहते हैं ?
- (ग) बाणभट्ट ने अपने छोटे लड़के को पुस्तक पूरी करने के लिए क्यों कहा ?
- (घ) किन-किन गुणों के कारण मनुष्य आदरभाजन बनता है ?
- (ङ) मधुर वचन और कटु वचन बोलनेवालों को क्या मिलता है ?
- (च) किसी काम को करने के लिए सज्जन का पहला कर्तव्य क्या है ?
- (छ) वार्तालाप में व्यापारीक बातचीत और निजी बातचीत में क्या अंतर है ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए :

- (क) मनुष्य की सामाजिकता किसके द्वारा कायम रहती है ?
- (ख) कैसा शब्द दो रुठों को मिला देता है और कैसा शब्द दो मित्रों के मन में वैमनष्य उत्पन्न कर देता है ?
- (ग) बाणभट्ट की कौन-सी किताब अधूरी रह गयी थी ?
- (घ) वार्तालाप की शिष्टता से हमें क्या लाभ मिलता है ?
- (ङ) कथनी और करनी में साम्य क्यों आवश्यक है ?
- (च) मनुष्य कब बंद्य बनता है ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक शब्द या एक वाक्य में दीजिए :

- (क) भाषा द्वारा किसकी रक्षा होती है ?
- (ख) 'मधुर भाषण' निबंध के लेखक कौन हैं ?

- (ग) कौन मनुष्य को आदर भाजन बनाती है ?
- (घ) मधुर भाषी के लिए किसमें साम्य रखने की आवश्यकता है ?
- (ङ) किन-किन का सामंजस्य मनुष्यता को श्रेष्ठता के पद पर पहुँचाता है ?
- (च) किन-किन का योग नहीं हो सकता ?
- (छ) किसकी दो लातें भी सहन की जाती हैं ?
- (ज) शिष्टता क्या है ?
- (झ) किसकी रक्षा सज्जन का पहला कर्तव्य है ?
- (ञ) निजी संबंध की बातचीत में किसका अभाव न रहना चाहिए ?

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित में से विशेषण शब्दों को चुनकर लिखिए :

विश्वास, भौतिक, पटु, माधुर्य, वचन, शिष्टता, प्रसन्नता, व्यापारिक, सैद्धान्तिक, मर्यादा, अभिमान ।

2. निम्नलिखित शब्दों के लिंग बताइए :

गंध, भाव, कर्तव्य, परंपरा, भाषा, भाषण, वचन, वाणी, साहित्य, उन्नति ।

3. निम्नलिखित के पर्यायवाची शब्द लिखिए :

मनुष्य, चित्र, पुस्तक, मधुर, कटु, आनंद

4. निम्नलिखित शब्दों के विलोम रूप लिखिए :

ज्ञान, उन्नति, सच्चा, मधुर, आनंद, मित्र, बड़ा

5. निम्नलिखित शब्दों के प्रयोग से एक-एक वाक्य बनाइए :

वचन, भाषण, चाल-ढाल, आदान-प्रदान, सामंजस्य, इनकार, आत्मीयता

6. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए :

- (क) भाषा मनुष्य के विशेष अधिकार है ।
- (ख) हृदय का मलीनता और मधुर वचनो में योग नहीं हो सकता ।
- (ग) कटुभाषी लोगों में लोग हृदय खोलकर बात करने में डरते हैं ।
- (घ) भाव को प्रभावशाली भाषा के व्यक्त कर देना ही साहित्य है ।
- (ङ) मधुर वचन दूसरे में प्रसन्न भी कर सकते हैं ।

7. 'ता' प्रत्यय लगाकर शब्द बनाइए :

सामाजिक, मनुष्य, प्रसन्न, अशिष्ट, मलीन

8. 'इक' प्रत्यय लगाकर शब्द बनाइए :

विचार, नीति, इतिहास, भूत, समाज, साहित्य, सिद्धांत, व्यापार

निम्नलिखित वाक्यों को याद रखिए :

- (क) वाणी और कर्म में सामंजस्य ही मनुष्य को श्रेष्ठता के पद पर पहुँचाता है ।
- (ख) मधुरभाषी के लिए कथनी और करनी का साम्य आवश्यक है ।
- (ग) चित्त को पिघलानेवाला जो आनंद होता है, उसे 'माधुर्य' कहते हैं ।
- (घ) वार्त्तालाप की शिष्टता मनुष्य को आदर भाजन बनाती है ।

योग्यता विस्तार :

- (क) कक्षा में 'मधुर' भाषण का एक कार्यक्रम आयोजित कीजिए ।
- (ख) अपनी योग्यता बढ़ाने के लिए ऊपर छाँटकर दिए गए मधुर वाक्यों को याद रखिए और अपने भाषण को सरस बनाने के लिए इसका उपयोग कीजिए ।





बोध

प्रेमचन्द

लेखक परिचय :

प्रेमचन्द का जन्म उत्तर प्रदेश के बनारस के पास लमही नामक गाँव में 31 जुलाई, सन् 1880 को एक कायस्थ परिवार में हुआ था। प्रेमचन्द के बचपन का नाम धनपतराय था। उनके पिता अजायब लाल डाक-मुंशी थे। जब प्रेमचन्द सात साल के थे, माता चल बसीं और चौदह की उम्र में पिता भी चल बसे। प्रेमचन्द ने ट्यूसन करके परिवार चलाया। आरम्भ में उन्होंने उर्दू-फारसी की शिक्षा पायी। फिर मैट्रिक परीक्षा पास की। स्कूल में बीस रुपये वेतन में अध्यापक बन गये। आगे उन्होंने बी.ए. पास किया। कुछ दिन स्कूल में अध्यापक रहने के बाद सन् 1921 ईस्वी में प्रेमचन्द गोरखपुर में स्कूलों के डिप्टी इंस्पेक्टर बन गये। उन दिनों महात्मा गांधी के नेतृत्व में अंग्रेजों के खिलाफ असहयोग आन्दोलन चलाया जा रहा था। प्रेमचन्द इससे बड़े प्रभावित हुए, फिर नौकरी से उन्होंने इस्तीफा दे दी।

सन् 1901 के लगभग प्रेमचन्द ने पहले कहानियों को लिखना शुरू किया। 5-6 साल बाद उन्होंने उपन्यास लिखे। वे पहले उर्दू में लिखा करते थे, फिर हिन्दी में लिखा। उनकी कहानियाँ उर्दू पत्रिका 'जमाना' में छपती थीं। प्रेमचन्द ने लगभग ढाई सौ से ज्यादा कहानियाँ लिखीं, बारह उपन्यास लिखे और कुछ निबंध भी। प्रेमचन्द 'मर्यादा' और 'माधुरी' पत्रिका का संपादन किया करते थे। फिर उन्होंने बनारस में सरस्वती प्रेस की स्थापना की एवं 'हंस' मासिक तथा 'जागरण' साप्ताहिक पत्रिका का संपादन किया। सन् 1934-35 में उन्होंने बम्बई (मुम्बई) की फिल्म दुनिया में काम किया। पर ज्यादातर उनका समय बनारस और लखनऊ में बीता।

प्रेमचन्द की समस्त कहानियाँ 'मानसरोवर' में संकलित की गयी हैं। हिन्दी कहानी-साहित्य में प्रेमचन्द ने सबसे पहले कल्पना के बदले मानव-जीवन को विषय बनाया। आम आदमी के दुःख-दर्द का वर्णन किया। अतः उनकी कहानियों में किसान-मजदूर की गरीब जिन्दगी के साथ मेहनती आदमी का चित्र मिलता है। नारी-जीवन की विडम्बना को उन्होंने सहानुभूति के साथ दिखाया। उनकी रचनाओं में शोषित, दलित, दुःखी नर-नारियों के साथ पशु-पक्षियों के प्रति भी आत्मीयता तथा संवेदनशीलता मिलती है।

प्रेमचन्द की भाषा-शैली की सबसे बड़ी विशेषता उनकी बोलचाल की भाषा है। इसमें सरल उर्दू-संस्कृत शब्दों के साथ देहाती लब्ज (शब्द) भी हैं। इसलिए भाषा बड़ी मजेदार और सजीव है।

प्रेमचन्द की रचनाएँ हैं :- कहानी-संग्रह : मान सरोवर (आठ भाग), उपन्यास : सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कायाकल्प, निर्मला, गबन, कर्मभूमि, गोदान, मंगल-सूत्र (अपूर्ण) आदि । निबंध-संग्रह : कुछ विचार, प्रेमचन्द : विविध प्रसंग । नाटक : संग्राम, कर्बला, प्रेम की वेदी ।

विचार-बोध :

कुशल कहानीकार प्रेमचन्द की यह एक मार्मिक कहानी है । लोग जीवन में धन कमाने, प्रतिष्ठा पाने, धाक जमाने में लगे रहते हैं । इसीमें अन्याय, अत्याचार, करते रहते हैं । पर वे भूल जाते हैं कि जैसे बोओगे वैसे काटोगे ।

कहानी में तीन पात्र हैं— एक गरीब मास्टर हैं, दूसरे अमीर मुंशी हैं और तीसरे पुलिस के सिपाही । पण्डित चन्द्रधर को स्वल्प वेतन मिलता था, न बाहर की कोई आमदनी और न पदोन्नति । जिन्दगी भर बच्चों को पढ़ाते रहे, बच्चों को प्यार किया, आदमी बनाया । मुंशी बैजनाथ और ठाकुर अतिबल सिंह ने अपनी पदवी और जीविका का नाजायज फायदा उठाया, खूब धन कमाया और वे लोग ऐशो-आराम से रहे । उनमें स्नेह, दया आदि मानवीय भाव नहीं थे । कठोर आचरण था । इसका क्या परिणाम हुआ ?

कहानी आगे बढ़ती है । एक बार तीनों अयोध्या की यात्रा में निकले । रेलगाड़ी के एक डिब्बे में घुसे । वहाँ चार आदमी लेट रहे थे । उनको बैठने को जगह नहीं दी । झगड़ने लगे । क्योंकि वे पहले मुंशी जी और जमादार के हाथों सताये गये थे । किसी तरह मुंशीजी, ठाकुरजी और पण्डित चन्द्रधर अयोध्या तो पहुँचे, पर कहीं रुकनेकी जगह नहीं मिली । इतनेमें पण्डितजी के एक शिष्य कृपाशंकर मिल गये । उन्होंने अपने गुरु के पाँव छुए । सबको अपने घर ले गये, शानदार आतिथ्य किया । वह भी बड़ी खुशी से । कहा कि गुरुजी के कारण मैं आदमी बना हूँ । उनकी सेवा करके धन्य हुआ । सब लोग खुश हुए ।

पण्डितजी जिन्दगी भर गरीबी में सड़ते रहे । इससे अपने भाग्य को कोसते रहते थे । लेकिन इस घटना से उनको बोध (ज्ञान) हुआ कि शिक्षकता महान् कर्म है । वे जिन्दगी भर का दुःख भूल गये । उन्हें अपने शिक्षक होने के महत्त्व का बोध हुआ । फिर कभी न उन्होंने अपने आपको कोसा और न शिक्षक का पद छोड़कर दूसरे विभाग में नौकरी करने की कोशिश की ।

बोध

पंडित चन्द्रधर ने एक अपर प्राइमरी में मुदर्रिसी तो कर ली थी, किंतु सदा पछताया करते कि कहाँ से इस जंजाल में आ फँसे । यदि किसी अन्य विभाग में नौकर होते तो अब तक हाथ में चार पैसे होते, आराम से जीवन व्यतीत होता । यहाँ तो महीने भर प्रतीक्षा करने के पीछे कहीं पंद्रह रुपये देखने को मिलते हैं । यह भी इधर आये, उधर गायब ! न खाने का सुख, न पहनने का आराम । हमसे तो मजूर ही भले ।

पंडित जी के पड़ोस में दो महाशय और रहते थे । एक ठाकुर अतिबल सिंह, वह थाने में हेड कान्सटेबल थे । दूसरे मुंशी बैजनाथ । वह तहसील में सियाहेनवीस थे । इन दोनों आदमियों का वेतन पंडित से कुछ अधिक न था, तब भी उनकी चैन से गुजरती थी । संध्या को वह कचहरी से आते, बच्चों को पैसे और मिठाइयाँ देते । दोनों आदमियों के पास टहलते थे । घर में कुरसियाँ, मेजें, फर्श आदि सामग्रियाँ मौजूद थीं । ठाकुर साहब शाम को आराम कुरसी पर लेट जाते और खुशबूदार खमीरा पीते । मुंशीजी को शराब-कबाब का व्यसन था । अपने सुसज्जित कमरे में बैठे हुए बोतल की बोतल साफ कर देते । जब कुछ नशा होता तो हारमोनियम बजाते । सारे मुहल्ले में उनका रोबदाब था । उन दोनों महाशयों को आते-जाते देख कर बनिये उठकर सलाम करते । उनके लिए बाजार में अलग भाव था । चार पैसे की चीज टके में लाते । लकड़ी-ईंधन मुफ्त में मिलता । पंडित जी उनके ठाट-बाट को देखकर कुढ़ते और अपने भाग्य को कोसते । वह लोग इतना भी न जानते थे कि पृथ्वी सूर्य का चक्कर लगाती है अथवा सूर्य पृथ्वी का । साधारण पहाड़ों का भी ज्ञान न था, जिस पर भी ईश्वर ने उन्हें इतनी प्रभुता दे रखी थी । यह लोग पंडित जी पर बड़ी कृपा रखते थे । कभी सेर आध, सेर दूध भेज देते और कभी थोड़ी-सी तरकारियाँ । किन्तु इनके बदले में पंडित जी को ठाकुर साहब के दो और मुंशीजी के तीन लड़कों की निगरानी करनी पड़ती । ठाकुर साहब कहते, पंडित जी ! यह लड़के हर घड़ी खेला करते हैं, जरा इनकी खबर लेते रहिए । मुंशीजी कहते, यह लड़के आवारा हुए जाते हैं, जरा इनका ख्याल रखिए । यह बातें बड़ी अनुग्रहपूर्ण रीति से कही जाती थीं मानो पंडित जी उनके गुलाम हैं । पंडित जी को यह व्यवहार असह्य था, किंतु इन लोगों को नाराज करने का साहस न कर सकते थे, उनकी बदौलत कभी-कभी दूध-दही के दर्शन हो जाते, कभी आचार-चटनी चख लेते । केवल इतना ही नहीं, बाजार से चीजें भी सस्ती लाते । इसलिए बेचारे इस अनीति को विष के घूँट के

समान पीते । इस दुरवस्था से निकलने के लिए उन्होंने बड़े-बड़े यत्न किये थे । प्रार्थना-पत्र लिखे, अफसरों की खुशामदें कीं, पर आशा पूरी न हुई । अंत में हार कर बैठ रहे । हाँ, इतना था कि अपने काम में त्रुटि न होने देते । ठीक समय पर जाते, देर करके आते, मन लगाकर पढ़ाते । इससे उनके अफसर लोग खुश थे । साल में कुछ इनाम देते और वेतन-वृद्धि का जब कभी अवसर आता, उसका विशेष ध्यान रखते । परन्तु इस विभाग की वेतन-वृद्धि ऊसर की खेती है । बड़े भाग से हाथ लगती है । बस्ती के लोग उनसे संतुष्ट थे । लड़कों की संख्या बढ़ गयी थी और पाठशाला के लड़के भी उन पर जान देते थे । कोई उनके घर आकर पानी भर देता, कोई उनकी बकरी के लिए पत्तियाँ तोड़ लाता । पंडित जी इसी को बहुत समझते थे ।

एक बार सावन के महीने में मुंशी बैजनाथ और ठाकुर अतिबल सिंह ने श्री अयोध्या जी की यात्रा की सलाह की । दूर की यात्रा थी । हफ्तों पहले से तैयारियाँ होने लगीं । बरसात के दिन, सपरिवार जाने में अड़चन थी, किंतु स्त्रियाँ किसी भाँति भी न मानती थीं । अंत में विवश होकर दोनों महाशयों ने एक-एक सप्ताह की छुट्टी ली और अयोध्या जी चले । पंडित जी को भी साथ चलने के लिए बाध्य किया । मेले-ठेले में एक फालतू आदमी से बड़े काम निकलते हैं । पंडित जी असमंजस में पड़े, परन्तु जब उन लोगों ने उनका व्यय देना स्वीकार किया तो इन्कार न कर सके और अयोध्या जी की यात्रा का ऐसा सुअवसर पाकर न रुक सके ।

बिल्हौर से एक बजे रात गाड़ी छूटती थी । यह लोग खा-पीकर स्टेशन पर आ बैठे । जिस समय गाड़ी आयी, चारों ओर भगदड़-सी पड़ गयी— हजारों यात्री जा रहे थे । उस उतावली में मुंशीजी पहले निकल गये । पंडित जी और ठाकुर साहब साथ थे । एक कमरे में बैठे । इस आफत में कौन किसका रास्ता देखता ।

गाड़ी में जगह की बड़ी कमी थी, परन्तु जिस कमरे में ठाकुर साहब थे उसमें केवल चार मनुष्य थे । वह सब लेटे हुए थे । ठाकुर साहब चाहते थे कि वह उठ जायें तो जगह निकल आये । उन्होंने एक मनुष्य से डाँटकर कहा— उठ बैठो जी, देखते नहीं हम लोग खड़े हैं ।

मुसाफिर लेटे-लेटे बोला— क्यों उठ बैठें जी ? कुछ तुम्हारे बैठने का ठेका लिया है ?

ठाकुर— क्या हमने किराया नहीं दिया है ?

मुसाफिर- जिसे किराया दिया हो, उससे जाकर जगह माँगो ।

ठाकुर- जरा होश की बातें करो । इस डब्बे में दस यात्रियों के बैठने की आज्ञा है ।

मुसाफिर- यह थाना नहीं है, जरा जबान सँभाल कर बातें कीजिए ।

ठाकुर- तुम कौन हो जी ?

मुसाफिर- हम वही हैं जिस पर आपने खुफिया फरोसी का अपराध लगाया था और जिसके द्वार से आप नकद २५ रु. लेकर टले थे ।

ठाकुर- अहा ! अब पहचाना । परन्तु मैंने तो तुम्हारे साथ रियायत की थी । चालान कर देता तो तुम सजा पा जाते ।

मुसाफिर- और मैंने भी तो तुम्हारे साथ रियायत की कि गाड़ी नें खड़ा रहने दिया । ढकेल देता तो तुम नीचे जाते और तुम्हारी हड्डी-पसली का पता न लगता ।

इतने में दूसरा लेटा हुआ यात्री जोर से ठट्ठा मार कर हँसा और बोला- और क्यों दरोगा साहब, मुझे क्यों नहीं उठाते ?

ठाकुर साहब क्रोध से लाल हो रहे थे । सोचते थे अगर थाने में होता तो इसकी जबान खींच लेता, पर इस समय बुरे फँसे थे । वह बलवान मनुष्य थे, पर यह दोनों मनुष्य भी हट्टे-कट्टे दिख पड़ते थे ।

ठाकुर- सन्दूक नीचे रख दो, बस जगह हो जाय ।

दूसरा मुसाफिर बोला- और आप ही क्यों न नीचे बैठ जायँ । इसमें कौन-सी हेठी हुई जाती है । यह थाना थोड़े ही है कि आपके रोब में फर्क पड़ जायेगा ।

ठाकुर साहब ने उसकी ओर भी ध्यान से देखकर पूछा- क्या तुम्हें भी मुझसे कोई वैर है ?

‘जी हाँ, मैं तो आपके खून का प्यासा हूँ ।’

‘मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है, तुम्हारी तो सूरत भी नहीं देखी ।’

दू० मु० -आपने मेरी सूरत न देखी होगी, पर आपके डंडे ने देखी है। इसी कल के मेले में आपने मुझे कई डंडे लगाये। मैं चुपचाप तमाशा देखता था, पर आपने आकर मेरा कचूमर निकाल लिया। मैं चुप रह गया, घाव दिल पर लगा हुआ है। आज उसकी दवा मिलेगी।

यह कहकर उसने और भी पाँव फैला दिया और क्रोधपूर्ण नेत्रों से देखने लगा। पंडित जी अब तक चुपचाप खड़े थे। डरते थे कि कहीं मार-पीट न हो जाय। अवसर पाकर ठाकुर साहब को समझाया। ज्योंही तीसरा स्टेशन आया, ठाकुर साहब ने बाल-बच्चों को वहाँ से निकाल कर दूसरे कमरे में बैठाया। इन दोनों दुष्टों ने उनका असबाब उठा-उठा कर जमीन पर फेंक दिया। जब ठाकुर साहब गाड़ी से उतरने लगे तो उन्होंने उनको ऐसा धक्का दिया कि बेचारे प्लेटफार्म पर गिर पड़े। गार्ड से कहने दौड़े थे कि इंजिन ने सीटी दी, जाकर गाड़ी में बैठ गये।

उधर मुंशी बैजनाथ की और भी बुरी दशा थी। सारी रात जागते गुजारी। जरा पैर फैलाने की जगह न थी। आज उन्होंने जेब में बोतल भरकर रख ली थी। प्रत्येक स्टेशन पर कोयला-पानी ले लेते थे। फल यह हुआ कि पाचन-क्रिया में विघ्न पड़ गया। एक बार उल्टी हुई और पेट में मरोड़ होने लगी। बेचारे बड़ी मुश्किल में पड़े। चाहते थे कि किसी भाँति लेट जायँ, पर वहाँ पैर हिलाने की भी जगह न थी। लखनऊ तक तो उन्होंने किसी तरह जब्त किया। आगे चलकर विवश हो गये। एक स्टेशन पर उतर पड़े। प्लेटफार्म पर लेट गये। पत्नी भी घबरायी। बच्चों को लेकर उतर पड़ी। असबाब उतारा, परंतु जल्दी में ट्रंक उतारना भूल गयी। गाड़ी चल दी। दारोगा जी ने अपने मित्र को इस दशा में देखा तो वह भी उतर पड़े। समझ गये कि हजरत आज ज्यादा चढ़ा गये। देखा तो मुंशी जी की दशा बिगड़ गयी थी। ज्वर, पेट में दर्द, नसों में तनाव, कै और दस्त। बड़ा खटका हुआ। स्टेशन मास्टर ने यह हाल देखा तो समझे हैजा हो गया है। हुक्म दिया, रोगी को बाहर ले जाओ। विवश होकर लोग मुंशीजी को एक पेड़ के नीचे उठा ले गये। उनकी पत्नी रोने लगी। हकीम-डाक्टर की तलाश-हुई। पता लगा कि डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की तरफ से वहाँ एक छोटा-सा अस्पताल है। लोगों की जान में जान आयी। किसी से यह भी मालूम हुआ कि डाक्टर साहब बिल्हौर के रहने वाले हैं। ढाढ़स बँधा। दारोगा जी अस्पताल दौड़े। डाक्टर साहब से समाचार कह सुनाया और कहा— आप चलकर जरा उन्हें देख तो लीजिए।

डाक्टर का नाम था चोखेलाल । कम्पौंडर थे, लोग आदर से डाक्टर कहा करते थे । सब वृत्तांत सुनकर रुखाई से बोले— सबेरे के समय मुझे बाहर जाने की आज्ञा नहीं है ।

दारोगा— तो क्या मुंशी जी को यहीं लावें ?

चोखेलाल— हाँ, आपका जी चाहे लाइए ।

दारोगा जी ने दौड़-धूप कर एक डोली का प्रबंध किया । मुंशीजी को लाद कर अस्पताल लाये । ज्योंही बरामदे में पैर रखा, चोखेलाल ने डाँट कर कहा— हैजे (विसूचिका) के रोगी को ऊपर लाने की आज्ञा नहीं है ।

बैजनाथ अचेत तो थे नहीं, आवाज सुनी, पहचाना, धीरे से बोले— अरे यह तो बिल्हौर ही के हैं— भला-सा नाम है । तहसील में आया-जाया करते हैं । क्यों महाशय । मुझे पहचानते हैं ?

चोखेलाल— जी हाँ, खूब पहचानता हूँ ।

बैजनाथ— पहचान कर भी इतनी निठुरता । मेरी जान निकल रही है । जरा देखिए, मुझे क्या हो गया ?

चोखे— हाँ, यह सब कर दूँगा और मेरा काम ही क्या ? फीस ?

दारोगा जी— अस्पताल में कैसी फीस जनाबेमन ।

चोखे— वैसे ही जैसी इन मुंशीजी ने मुझसे वसूल की थी जनाबेमन ।

दारोगा जी— आप कहते हैं, मेरी समझ में नहीं आता ।

चोखे— मेरा घर बिल्हौर में है । वहाँ मेरी थोड़ी-सी जमीन है । साल में दो बार उसकी देखभाल को जाना पड़ता है । जब तहसील में लगान जमा करने जाता हूँ, मुंशी जी डाँटकर अपना हक वसूल कर लेते हैं । न दूँ तो शाम तक खड़ा रहना पड़े । स्याहा न हो । फिर जनाब कभी गाड़ी नाव पर, कभी नाव गाड़ी पर । मेरी फीस दस रुपये निकालिए । देखूँ, दवा दूँ तो अपनी राह लीजिए ।

दारोगा— दस रुपये !!

चोखे— जी हाँ, और यहाँ ठहरना चाहें तो दस रुपये रोज ।

दारोगा जी विवश हो गये । बैजनाथ की स्त्री से रुपये माँगे । तब उसे अपने बक्से की याद आयी । छाती पीट ली । दारोगा जी के पास भी अधिक रुपये नहीं थे, किसी तरह दस रुपये निकालकर चोखेलाल को दिये— उन्होंने दवा दी । दिन भर कुछ फायदा न हुआ । रात को दशा सँभली । दूसरे दिन फिर दवा की आवश्यकता हुई । मुंशियाइन का एक गहना जो २० रु० से कम का न था बाजार में बेचा गया । तब काम चला । शाम तक मुंशीजी चंगे हुए । रात को गाड़ी पर बैठकर खूब गालियाँ दीं ।

श्री अयोध्या जी में पहुँच कर स्थान की खोज हुई । पंडों के घर में जगह न थी । घर-घर में आदमी भरे हुए थे । सारी बस्ती छान मारी, पर कहीं ठिकाना न मिला । अंत में यह निश्चय हुआ कि किसी पेड़ के नीचे डेरा जमाना चाहिए । किन्तु जिस पेड़ के नीचे जाते थे वहीं यात्री पड़े मिलते । खुले मैदान में, रेत पर पड़े रहने के सिवा और कोई उपाय न था । एक स्वच्छ स्थान देखकर बिस्तरे बिछाये और लेटे । इतने में बादल घिर आये । बूँदे गिरने लगीं । बिजली चमकने लगी । गरज से कान के परदे फटे जाते थे । लड़के रोते थे । स्त्रियों के कलेजे काँप रहे थे । अब यहाँ ठहरना दुस्सह था, पर जायें कहाँ ।

अकस्मात् एक मनुष्य नदी की तरफ से लालटेन लिए आता हुआ दिखायी दिया— वह निकट पहुँच गया तो पंडित जी ने उसे देखा । आकृति कुछ पहिचानी हुई मालूम हुई । किंतु यह विचार न आया कि कहाँ देखा है । पास जाकर बोले— क्यों भाई साहब, यहाँ यात्रियों के ठहरने के लिए जगह न मिलेगी ? वह मनुष्य रुक गया । पंडित जी की ओर ध्यान से देखकर बोला— आप पंडित चंद्रधर तो नहीं हैं ?

पंडित जी प्रसन्न होकर बोले— जी हाँ । आप मुझे कैसे जानते हैं ?

उस मनुष्य ने सादर पंडित जी के चरण छुए और बोला— मैं आपका पुराना शिष्य हूँ । मेरा नाम कृपाशंकर है । मेरे पिता कुछ दिनों बिल्हौर के डाक-मुंशी रहे थे । उन्हीं दिनों मैं आपकी सेवा में पढ़ता था ।

पंडित जी की स्मृति जागी, बोले— ओहो तुम्हीं हो कृपाशंकर ! तब तो तुम दुबले-पतले लड़के थे, कोई आठ-नौ साल हुए होंगे ।

कृपा— जी हाँ, नवाँ साल था । मैंने वहाँ से आकर इन्ट्रेस पास किया, अब यहाँ म्युनिसिपिल्टी में नौकर हूँ । कहिए आप तो अच्छी तरह रहे । सौभाग्य था कि आपके दर्शन हो गये ।

पंडित- मुझे भी तुमसे मिल कर बड़ा आनंद हुआ । तुम्हारे पिता अब कहाँ हैं ?

कृपा- उनका तो देहांत हो गया । माता साथ हैं । आप यहाँ कब आये ।

पंडित- आज ही आया हूँ । पंडों के घर में जगह न मिली । विवश होकर यहीं रात काटने की ठहरी ।

कृपा- बाल-बच्चे भी साथ हैं ?

पंडित- नहीं, मैं तो अकेले ही आया हूँ । पर मेरे साथ दारोगा जी और सियाहेनवीस साहब हैं- उनके बाल-बच्चे भी साथ हैं ।

कृपा- कुल कितने मनुष्य होंगे ?

पंडित जी- हैं तो दस, किन्तु थोड़ी-सी जगह में निर्वाह कर लेंगे ।

कृपा- नहीं साहब, बहुत-सी जगह लीजिए । मेरा बड़ा मकान खाली पड़ा है । चलिये, आराम से एक, दो, तीन दिन रहिये । मेरा परम सौभाग्य है कि आपकी कुछ सेवा करने का अवसर मिला ।

कृपाशंकर ने कई कुली बुलाये । असबाब उठवाया और सबको अपने मकान पर ले गया । साफ-सुथरा घर था । नौकर ने चटपट चारपाइयाँ बिछा दीं । घर में पूरियाँ पकने लगीं । कृपाशंकर हाथ बाँधे सेवक की भाँति दौड़ता था । हृदयोल्लास से उसका मुख-कमल चमक रहा था । उसकी विनय और नम्रता ने सबको मुग्ध कर लिया ।

और सब लोग तो खा-पीकर सोये । किंतु पंडित चंद्रधर को नींद नहीं आयी । उनकी विचार शक्ति इस यात्रा की घटनाओं का उल्लेख कर रही थी । रेलगाड़ी की रगड़-झगड़ और चिकित्सालय की नोच-खसोट के सम्मुख कृपाशंकर की सहायता और शालीनता प्रकाशमय दिखायी देती थी ।

पंडित जी ने आज शिक्षक का गौरव समझा ।

उन्हें आज इस पद की महानता ज्ञात हुई ।

यह लोग तीन दिन अयोध्या रहे । किसी बात का कष्ट न हुआ । कृपाशंकर ने उनके साथ जाकर प्रत्येक धाम का दर्शन कराया ।

तीसरे दिन जब लोग चलने लगे तो वह स्टेशन तक पहुँचाने आया । जब गाड़ी ने सीटी दी तो उसने सजल नेत्रों से पंडित जी के चरण छुए और बोला, कभी-कभी इस सेवक को याद करते रहिएगा ।

पंडित जी घर पहुँचे तो उनके स्वभाव में बड़ा परिवर्तन हो गया था । उन्होंने फिर किसी दूसरे विभाग में जाने की चेष्टा नहीं की ।



शब्दार्थ :

बोध - ज्ञान, जानकारी, तसल्ली । मुदर्रिसी - अध्यापक की नौकरी, शिक्षकता । जंजाल - झंझट, बखेड़ा । मजूर - मजदूर । मुंशी - मुहरिर, कायस्थों की एक उपाधि । तहसील - तहसीलदार का दफ्तर या कचहरी । सियाहेनवीस - सरकारी खजाने में सियाहा लिखनेवाला । सियाहा - आय-व्यय की बही अथवा रोजनामचा; सरकारी खजाने का वह रजिस्टर जिसमें जमीन से प्राप्त मालगुजारी लिखी जाती है । खमीरा - कटहल या अन्य फल आदि का सड़ाव जो तम्बाकू में डाला जाता है । कबाब - सीखों पर भूना हुआ मांस । रोबदाब - बड़प्पन की धाक, दबदबा । बनिया - व्यापारी, आटा-दाल आदि बेचनेवाला । टका - अधन्ना, दो पैसे । ठाठ-बाट - आड़म्बर, सजधज, तड़क-भड़क । कुढ़ते - मन ही मन खीझते या चिढ़ते । कोसते - गालियाँ देते । निगरानी - देखरेख । आवारा - व्यर्थ इधर-उधर फेरनेवाला । अनुग्रहपूर्ण - दयापूर्वक । उनकी बदौलत- उनके कारण से । ऊसर - क्षारमृत्तिका या खारी जमीन; वह भूमि जिसमें रेह या लोनी मिट्टी अधिक होनेके कारण पानी बरसने पर भी घास तक नहीं जमती । मेले-ठेले - भीड़-भाड़ । असमंजस- दुविधा, भगदड़-सी- भागनेकी भांति । खुफिया - गुप्त, छिपा हुआ । फरोसी - बेचनेवाला । रियायत - छूट, नरमी । चालान - किसी अपराधी का पकड़ा जाकर न्याय के लिए न्यायालय में भेजा जाना । ढकेल देना- धक्के से गिरा देना । ठट्ठा मारकर हँसना - उपहास करना । दरोगा - थानेदार । जबान - जीभ । हटे-कट्टे- हष्ट-पुष्ट । सन्दूक - पिटारा, बक्स । हेठी-तौहीन या मानहानि । रोब - बड़प्पन की धाक, दबदबा । वैर-दुश्मनी । तमाशा- वह दृश्य जिसके देखनेसे मनोरंजन हो । कचूमर निकालना - कुचलना या कूटना या पीटना । असबाब- वस्तु, सामान । उल्टी- वमन, कै । हजरत - महाशय, खोटा आदमी । नस - स्नायु । कै- उल्टी । दस्त- पतला पायखाना । खटका - भय, चिन्ता । हैजा - विशूचिका, दस्त और कै की बीमारी । हकीम- चिकित्सक । ढाढस- आश्वासन, तसल्ली, धैर्य । डोली- एक प्रकार की सवारी जिसे कहार कंधों पर लेकर चलते हैं, पालकी, शिविका । बरामदा- दालान, बारजा ।

जनाब- महाशय, बड़ों के लिए आदरसूचक शब्द । स्याहा - सरकारी खजानेका वह रजिस्टर जिसमें जमीन से प्राप्त मालगुजारी लिखी जाती है, भूमिकर । चंगा - स्वस्थ । डेरा- पड़ाव, टिकान । चारपाई - खाट, खटिया । नोच-खसोट - झीना-झपटी । शालीनता - विनम्रता ।

प्रश्न और अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :

- (क) पण्डित चन्द्रधर हमेशा क्यों पछताया करते थे ?
- (ख) पण्डितजी क्यों कहा करते थे कि 'हम से तो मजूर ही भले ?
- (ग) ठाकुर अतिबल सिंह और मुंशी बैजनाथ के लिए बाजार में कैसे अलग भाव था ?
- (घ) ठाकुर साहब और मुंशीजी की कृपा के बदले में पण्डितजी को क्या करना पड़ता था ?
- (ङ) अपनी दुरवस्था से निकलनेके लिए पण्डितजी ने क्या किया ?
- (च) पण्डितजी पर अफसर लोग क्यों खुश थे ?
- (छ) पहले मुसाफिर ने ठाकुर अतिबल सिंह को गाड़ी में क्यों नहीं बैठने दिया ?
- (ज) ठाकुर साहब ने दूसरे मुसाफिर का क्या बिगाड़ा था ?
- (झ) डाक्टर चोखेलाल मुंशी बैजनाथ से क्यों नाराज था ?
- (ञ) पण्डित चन्द्रधर को नींद क्यों नहीं आयी ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए :

- (क) पण्डित चन्द्रधर ने कहाँ मुदर्सी की थी ?
- (ख) पण्डित जी के पड़ोस में कौन-कौन रहते थे ?
- (ग) सन्ध्या को कचहरी से आने पर मुंशी बैजनाथ क्या करते थे ?
- (घ) ठाकुर साहब शाम को क्या करते थे ?

- (ड) दोनों महाशयों को आते-जाते देखकर बनिये क्या करते थे ?
- (च) पण्डित जी अपने भाग्य को क्यों कोसते थे ?
- (छ) मुंशी जी ने पण्डितजी को किसका खयाल रखनेको कहा और क्यों ?
- (ज) ऊसर की खेती किसे कहा गया है ?
- (झ) पहले मुसाफिर पर ठाकुर साहब ने कौन-सा अपराध लगाया था और कितने रुपये लेकर वे टले थे ?
- (ञ) दूसरे मुसाफिर ने ठाकुर साहब से नीचे बैठ जाने की बात करते हुए क्या कहा ?
- (ट) कृपाशंकर ने बिल्हौर से कौन-सी परीक्षा पास की और अयोध्या में किस पद पर तैनात हुआ था ?
- (ठ) पण्डित जी को किस बात का बोध हुआ ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक शब्द में दीजिए :

- (क) 'बोध' कहानी किसने लिखी है ?
- (ख) पण्डित चन्द्रधर ने अपर प्राइमरी में कौन-सी नौकरी की थी ?
- (ग) कौन सदा पछताया करते थे कि कहाँ से इस जंजाल में आ फँसे ?
- (घ) महीने भर प्रतीक्षा करने के बाद पण्डित जी को कितने रुपये देखने को मिलते थे ?
- (ङ) तहसील में सियाहेनवीस कौन था ?
- (च) ठाकुर साहब आराम कुर्सी पर लेटकर क्या पीते थे ?
- (छ) मुंशी जी को कौन-सा व्यसन था ?
- (ज) अफसर लोग किस पर खुश थे ?
- (झ) वेतन-वृद्धि को किसकी खेती कहा गया है ?

(ज) कौन-से महीने में मुंशी बैजनाथ और ठाकुर अतिबल सिंह अयोध्या की यात्रा के लिए निकले थे ?

(ट) दोनों महाशयों ने कितने सप्ताह की छुट्टी ली ?

(ठ) बिल्हौर से कितने बजे गाड़ी छूटती थी ?

(ड) डाक्टर चोखेलाल कहाँ के रहनेवाले थे ?

(ढ) किसकी विनय और नम्रता ने सब को मुग्ध कर लिया ?

(ण) शिक्षक का गौरव किसने समझा ?

(त) सभी लोग अयोध्या में कितने दिन रहे ?

4. निम्नलिखित अवतरणों का अर्थ स्पष्ट कीजिए :

(क) हमसे तो मजूर ही भले ।

(ख) परन्तु इस विभाग की वेतन-वृद्धि ऊसर की खेती है ।

(ग) कभी गाड़ी नाव पर, कभी नाव गाड़ी पर ।

(घ) पण्डित जी ने आज शिक्षक का गौरव समझा ।

5. रिक्त स्थानों को भरिए :

(क) _____ पैसे की चीज टके में लाते ।

(ख) ईश्वर ने उन्हें इतनी _____ दे रखी थी ।

(ग) आपने आकर मेरा _____ निकाल दिया ।

(घ) दारोगा जी ने _____ कर एक डोली का प्रबन्ध किया ।

(ड) मेरे पिता कुछ दिनों बिल्हौर के _____ रहे थे ।

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दिये गये विकल्पों में से चुनकर लिखिए :

(क) पण्डित चन्द्रधर को कितने रुपये मासिक वेतन मिलता था ?

- (i) दस (ii) पचास (iii) पन्द्रह (iv) सौ ।

(ख) मुंशी बैजनाथ के कितने लड़के थे ?

- (i) दो (ii) चार (iii) तीन (iv) पाँच

(ग) 'इसमें कौन-सी हेठी हुई जाती है'। यह वाक्य किसने कहा ?

- (i) पहले मुसाफिर ने (ii) पण्डित चन्द्रधर ने
(iii) दूसरे मुसाफिर ने (iv) मुंशी बैजनाथ ने

(घ) 'आपके खून का प्यासा हूँ' का अर्थ है—

- (i) खून पीना चाहता हूँ (ii) प्यास बुझाना चाहता हूँ
(iii) वध करना चाहता हूँ (iv) मार-पीट करना चाहता हूँ ।

(ङ) 'पण्डित जी ने आज शिक्षक का गौरव समझा' का आशय है—

- (i) शिक्षकता का महत्त्व अधिक है ।
(ii) सबसे बड़ी नौकरी शिक्षक की है ।
(iii) दूसरी नौकरियों का कोई महत्त्व नहीं है ।
(iv) शिक्षक बननेमें वेतन अधिक मिलता है ।

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए :

(क) पण्डित चन्द्रधर ने, एक अपर प्राइमरी में मुदर्रिंसी की थी ।

(ख) पण्डित जी के पड़ोस में दो महाशय और रहते थे ।